



विकिपीडिया
एक मुक्त ज्ञानकोश

मुखपृष्ठ
चौपाल
हाल में हुए परिवर्तन
हाल की घटनाएँ
समाज मुखपृष्ठ
निर्वाचित विषयवस्तु
यादृच्छिक लेख

योगदान

प्रयोगपृष्ठ
अनुवाद हेतु लेख
आयात अनुरोध
विशेषाधिकार निवेदन
दान

सहायता

सहायता
स्वशिक्षा
अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न
देवनागरी कैसे टाइप करें
त्वरितवार्ता (आई॰आर॰सी
चैनल)
दूतावास (Embassy)

उपकरण

यहाँ क्या जुड़ता है

लेख संवाद

पढ़ें

सम्पादन

इतिहास देखें

विकिपीडिया में खोजें



शिव दयाल सिंह

मुक्त ज्ञानकोश विकिपीडिया से

श्री शिव दयाल सिंह साहब (1861 - 1878) (परम पुरुश पुरन धनी हुजुर स्वामी जी महाराज) राधास्वामी मत की शिक्षाओं का प्रारंभ करने वाले पहले सन्त सतगुरु थे। उनका जन्म नाम सेठ शिव दयाल सिंह था।

उनका जन्म 24 अगस्त 1818 में आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत में जन्माष्टमी के दिन हुआ। पाँच वर्ष की आयु में उन्हें पाठशाला भेजा गया जहाँ उन्होंने हिंदी, उर्दू, फारसी और गुरुमुखी सीखी। उन्होंने अरबी और संस्कृत भाषा का भी कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त किया। उनके माता-पिता हाथरस, भारत के परम संत तुलसी साहब के अनुयायी थे।^{[2][3][4]}

छोटी आयु में ही इनका विवाह फरीदाबाद के इज्जत राय की पुत्री नारायनी देवी से हुआ। उनका स्वभाव बहुत विशाल हृदयी था और वे पति के प्रति बहुत समर्पित थीं। शिव दयाल सिंह स्कूल से ही बांदा में एक सरकारी कार्यालय के लिए फारसी के विशेषज्ञ के तौर पर चुन लिए गए। वह नौकरी उन्हें रास नहीं आई. उन्होंने वह नौकरी छोड़ दी और बल्लभगढ़ एस्टेट के ताल्लुका में फारसी अध्यापक की नौकरी कर ली। सांसारिक उपलब्धियाँ उन्हें आकर्षित नहीं करती थीं और उन्होंने वह बढ़िया नौकरी भी छोड़ दी। वे अपना समस्त समय धार्मिक कार्यों में लगाने के लिए घर लौट आए।^{[3][5]}

उन्होंने 5 वर्ष की आयु से ही सुरत शब्द योग का साधन किया। 1861 में उन्होंने वसंत पंचमी (वसंत ऋतु का त्यौहार) के दिन सत्संग आम लोगो के लिये जारी किया।

स्वामी जी ने अपने दर्शन का नाम "सतनाम अनामी" रखा। इस आंदोलन को राधास्वामी के नाम से जाना गया। "राधा" का अर्थ "सुरत" और स्वामी का अर्थ "आदि शब्द या मालिक", इस प्रकार अर्थ हुआ "सुरत का आदि शब्द या मालिक में मिल जाना." स्वामी जी द्वारा सिखायी गई यौगिक पद्धति "सुरत शब्द योग" के तौर पर जानी जाती है।

स्वामी जी ने अध्यात्म और सच्चे 'नाम' का भेद वर्णित किया है।

उन्होंने 'सार-वचन' पुस्तक को दो भागों में लिखा जिनके नाम हैं:^{[6][7]}

- 'सार वचन वार्तिक' (सार वचन गद्य)

श्री शिव दयाल सिंह साहब

170px

वरिष्ठ पदासीन

क्षेत्र

उपाधियाँ राधास्वामी मत के संस्थापक

काल 1861 - 1878

उत्तराधिकारी हुजूर राय सालिगराम जी और बाबा जैमल सिंह जी^[1]

वैयक्तिक

जन्म तिथि अगस्त 24, 1818

जन्म स्थान पन्नी गली,आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

Date of death जून 15, 1878 (60 वर्ष)

मृत्यु स्थान पन्नी गली,आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

पृष्ठ से जुड़े बदलाव
फ़ाइल अपलोड करें
विशेष पृष्ठ
स्थायी कड़ी
इस पृष्ठ पर जानकारी
Wikidata प्रविष्टि
यह लेख उद्भूत करें
छोटा यू॰आर॰एल

विकि रुझान

आज के रुझान
हफ्ते भर के
महीने भर के

मुद्रण/निर्यात

पुस्तक बनायें
पीडीएफ़ रूप डाउनलोड करें
प्रिन्ट करने लायक

अन्य परियोजनाओं में

Wikimedia Commons

अन्य भाषाओं में

Deutsch
English
Español
فارسی
Русский

 कड़ी संपादित करें

- 'सार वचन छंद बंद' (सार वचन पद्य)

'सार वचन वार्तिक' में स्वामी जी महाराज के सत्संग हैं जो उन्होंने 1878 तक दिए। इनमें इस मत की महत्वपूर्ण शिक्षाएँ हैं। 'सार वचन छंद बंद' में उनके पद्य की भावनात्मक पहुँच बहुत गहरी है जो उत्तर भारत की प्रमुख भाषाओं यथा खड़ी बोली, अवधी, ब्रजभाषा, राजस्थानी और पंजाबी आदि विभिन्न भाषाओं की पद्यात्मक अभिव्यक्तियों का सफल और मिलाजुला रूप है।

उनका निधन जून 15, 1878 को आगरा, भारत में हुआ। इनकी समाधि दयाल बाग, आगरा में बनाई गई है जो एक भव्य भवन के रूप में है।

इन्हें भी देखें [संपादित करें]

- सुरत शब्द योग
- संतमत
- राधास्वामी
- बाबा फकीर चंद
- मानवता मंदिर
- शिव ब्रत लाल

बाहरी कड़ियाँ [संपादित करें]

- सावन कृपाल रुहानी मिशन [✍](#)
- <http://www.radhaswamidinod.org/faith.htm> [✍](#)
- <http://www.aors-dbbs.org/index.html> [✍](#)
- <http://www.sikh-heritage.co.uk/movements/radhasoamis/The%20radhasoamis.htm> [✍](#)
- <http://www.kheper.net/topics/chakras/chakras-SantMat.htm> [✍](#)
- http://www.seekersway.org/seekers_guide/radhasoami_1_g.html [✍](#)
- http://www.radhasoami-faith.info/Books_Frame.shtml [✍](#)
- <http://www.reference.com/search?db=web&q=Radha%20Soami&start=31> [✍](#)
- Radha Soami Satsang Beas [✍](#)
- Science of the Soul [✍](#)
- Sant Mat - Surat Shabd Yoga: Contemporary Guru Lines & Branches [✍](#)

सन्दर्भ [संपादित करें]

1. ↑ Santmat-meditation.net: स्वामी जी महाराज के उत्तराधिकारी हैं
2. ↑ [तुलसी साहब और उनकी शिक्षाएँ](#)
3. ↑ ^{अ आ} Radhasoamisatsang.org: स्वामी जी महाराज का जीवन और शिक्षाएँ
4. ↑ Angelfire.com: स्वामी जी महाराज का जीवन और शिक्षाएँ
5. ↑ Radhaswamidinod.org: स्वामी जी महाराज का जीवन और शिक्षाएँ
6. ↑ Radhasoamisatsang.org: स्वामी जी महाराज की पुस्तकें
7. ↑ Radhaswamidinod.org: स्वामी जी महाराज की पुस्तकें

श्रेणियाँ: [सुरत शब्द योग](#) | [संत मत](#) | [राधा स्वामी मत](#) | [योगी](#) | [धर्म](#)

अन्तिम परिवर्तन 12:30, 20 नवम्बर 2017।

यह सामग्री क्रियेटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन/शेयर-अलाइक लाइसेंस के तहत उपलब्ध है; अन्य शर्तें लागू हो सकती हैं। विस्तार से जानकारी हेतु देखें [उपयोग की शर्तें](#)

[गोपनीयता नीति](#) [विकिपीडिया के बारे में](#) [अस्वीकरण](#) [डेवेलपर्स](#) [कुकी का वर्णन](#) [मोबाइल दृश्य](#)



Shiv Dayal Singh

Free Knowledge from Wikipedia

Shri Shiv Dayal Singh Saheb

[170px](#)

Senior position

Area

Titles Founder of Radha Swami Vote

period 1861 - 1878

Successor Huzur Rai Saligram ji and Baba Jamal Singh ji ^[1]

Individual

date of birth August 24, 1818

birth place Pani Gali, [Agra](#) , [Uttar Pradesh](#) , [India](#)

Date of death June 15, 1878 (60 years)

Death place Pani Gali, [Agra](#) , [Uttar Pradesh](#) , [India](#)

Shri Shiv Dayal Singh Sahab (1861-1878) (Param Purush Puran Dhani Hujur Swami Ji Maharaj) [was](#) the first Satguru who started the teachings of [Radha Swami Vote](#) . His birth name was Seth Shiv Dayal Singh.

He was born on August 24, 1818 in [Janmashtami](#) in [Agra](#) , [Uttar Pradesh](#) , [India](#) . At the age of five, he was sent to the school where he learned [Hindi](#) , [Urdu](#) , [Persian](#) and Gurmukhi. He also got a working knowledge of [Arabic](#) and [Sanskrit](#) languages. His parents Hathras were followers of Tulsi Sahib, the supreme saint of [India](#) . ^{[2] [3] [4]}

In his younger age, he was married to Narayani Devi, daughter of Izzat Rai of [Faridabad](#) . His nature was very huge and he was very devoted to her husband. From Shiv Dyal Singh School, [Banda](#) was selected as a specialist in Persian for a government office. He did not come to that job. He left the job and got a job as a Persian teacher in the taluka of Vallabgarh Estate. World achievements did not attract them and they left that good job too. They returned home to devote all their time to religious work. ^{[3] [5]}

From the age of 5, he used the [term Surat](#) as a means of [yoga](#) . In 1861, he released the Satsang general logo on the day of [Vasant Panchami](#) (the festival of spring).

Swamiji named his philosophy "Satnam Anami". This movement was known as Radhaswamy. "Radha" means "Surat" and Swamiji means "word or master, etc.", meaning "to get into the word or owner of Surat." The computational system taught by Swami ji is known as "Surat Shabad Yoga".

Swamiji has described the difference between spirituality and true 'Naam'.

He wrote the book 'Sarva-Vachan' in two parts, namely: ^{[6] [7]}

- 'Abhaar Vacha Vartik' (Abhaar Vacharaka)
- 'Shabad Vachar Chhand Bandh' (Abstract verse verse)

In Saras Vardh Vartik, there are satsangs of Swami Ji Maharaj which he gave till 1878. These are important teachings of this opinion. The emotional access to his verse is very deep in 'Sarab Vyap Chabad Bandh', which is a successful and composite form of poetic expressions of various languages of North India, such as Vaadi Bid, [Awadhi](#) , [Braj Bhasha](#) , [Rajasthani](#) and [Punjabi](#) etc.

He passed away on June 15, 1878 in [Agra](#) , [India](#) . Their shrine is built in [Dayal Bagh](#) , Agra, which is in the form of a grand house.

See also

- [Surat word yoga](#)
- [Saint opinion](#)
- [Radhaswamy](#)
- [Baba Fakir Chand](#)
- [Humanity temple](#)
- [Shiva Brat Lal](#)

External links

- [Savann kripal ruhani mission](#)
- <http://www.radhaswamidinod.org/faith.htm>
- <http://www.aors-dbbs.org/index.html>
- <http://www.sikh-heritage.co.uk/movements/radhasoamis/The%20radhasoamis.htm>
- <http://www.kheper.net/topics/chakras/chakras-SantMat.htm>
- http://www.seekersway.org/seekers_guide/radhasoami_1_g.html
- http://www.radhasoami-faith.info/Books_Frame.shtml
- <http://www.reference.com/search?db=web&q=Radha%20Soami&start=31>
- [Radha Soami Satsang Beas](#)
- [Science of the Soul](#)
- [Sant Mat - Surat Shabd Yoga: Contemporary Gur Lines & Shanches](#)

References

1.

- [Santmat-meditation.net: The successor to Swami Ji Maharaj](#)
- [Tulsi Sahib and his teachings](#)
- [Radhasoamisatsang.org: Life and teachings of Swami Ji Maharaj](#)
- [Angelfire.com: Life and teachings of Swami Ji Maharaj](#)
- [Radhaswamidinod.org: Life and teachings of Swami Ji Maharaj](#)
- [Radhasoamisatsang.org: Books of Swami Ji Maharaj](#)

- Radhaswaminod.org: Books of Swami Ji Maharaj

Shiv Dayal Singh

July 15, 2012

Shri Shiv Dayal Singh Sahab (1861-1878) (Param Purush Puran Dhani Hujur Swami Ji Maharaj) was the first Satguru who started the teachings of Radha Swami Votes. His birth name was Seth Shiv Dayal Singh.

He was born on August 24, 1818 in Janmashtami in Agra, Uttar Pradesh, India. At the age of five, he was sent to the school where he learned Hindi, Urdu, Persian and Gurmukhi. He also got a working knowledge of Arabic and Sanskrit languages. Her parents were followers of Hathras, the supreme saint of India, Tulsi Sahab.

In a young age, she was married to Narayani Devi, daughter of Izzat Rai of Faridabad. His nature was very huge and he was very devoted to her husband. From Shiv Dyal Singh School, Banda was selected as a specialist in Persian for a government office. He did not come to that job. He left the job and got a job as a Persian teacher in Talukka of Vallabgarh Estate. World achievements did not attract them and they left that good job too. He returned home to devote all his time to religious work.

He made use of the word Surat from the age of 5 years. In 1861, he released the Satsang general logo on the day of Vasant Panchami (the festival of spring).

Swamiji named his philosophy "Satnam Anami". This movement was known as Radhaswamy. "Radha" means "Surat" and Swamiji means "word or master", meaning "to get into the word or owner of Surat." The computational system taught by Swami ji is known as "Surat Shabad Yoga".

Swamiji has described the difference between spirituality and true 'Naam'.

He wrote the book 'Sarva-Vachan' in two parts, whose names are:

In 'Sarab Shardha Vartik', there are satsangs of Swami Ji Maharaj which he gave till 1878. These are important teachings of this opinion. The emotional access to his verse is very deep in 'Abhaar Vaish Chabad Bandh' which is a successful and composite form of poetic expressions of various languages of North India such as Vaadi Bid, Awadhi, Braj Bhasha, Rajasthani and Punjabi etc.

He passed away on June 15, 1878 in Agra, India. Their samadhi is built in Dayal Bagh, Agra, which is in the form of a grand house. Also see them

wiki

Popular Posts

Rameswaram Tirtha

This article is about pilgrimage. For others, see Rameswaram (Multilateral). Rameswaram is a holy shrine of Hindus. It is located in Ramnathapuram district of Te...

Ramdas Gaur

Ramdas Gaud (1881 - 13 September 1938) was one of the founders of freedom fighter, Hindi writer and science council. introduction Mr. Ramdas Gaur was born...

Antonia Reininghaus

Antonia Reininghaus (1954 in Graz; † October 2006 ibid) was an Austrian actress. Reininghaus came from the Styrian entrepreneur family of the same name. ...*